

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

## A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 118	Year 15	Volume 02	June 2023 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150
------------------	-----------	---------	-----------	-------------------------	---------	--

### कैसा हो हमारा मन

वेदों में मनुष्य जीवन के हर पहलु को छूआ है। वास्तव में यह ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य को इस लिए दिया गया ताकी वह इस संसार में आकर, अपना जीवन ठीक तरह से यापन कर सके।

हमारे मन में आने वाले विचार ही हमारे जीवन को दिशा प्रदान करते हैं व हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। शरीर स्वस्थ भी हो मगर यदि मन पवित्र नहीं तो व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जायेगा। मन ही इन्द्रियों का संचालक तथा आत्मा को लीन करने वाला है। इस लिए मन का बहुत महत्व है। मन की शक्ति को पहचानकर इसे ठीक

रास्ते पर डालने की आवश्यकता है। कैसा हो हमारा 'मन' इस बारे में यर्जु वेद में कहा है

“जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को लगाम लगाकर अपने नियन्त्रण में रखता है, उसी प्रकार वश में किया हुआ मन मनुष्य को अच्छे व इच्छित स्थान पर ही ले जाता है। जो मन हमारे हृदय में वास करता है, कभी बूढ़ा नहीं होता, सबसे तीव्र गति से भागने वाला है, हे प्रभु वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।”

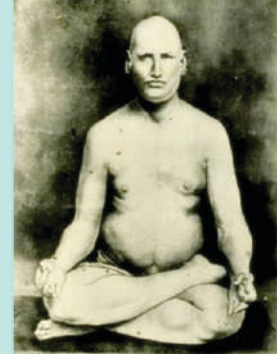
“जिस मन के अंदर ज्ञान-शक्ति, चिन्तन शक्ति, धैर्य शक्ति रहती है, जो मन अमृतमय व तेजमय है, जो इतना शक्तिशाली है कि इसके बिना मनुष्य कोई भी कर्म नहीं कर सकता हे प्रभु वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।”

“जो दिव्यगुणो वाला मन जागते तथा सोते समय दूर-दूर चला जाता है, जो दूर जाने वाला, ज्योतियों का प्रकाशक ज्योति है, हे प्रभु वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।”

गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं—“निःसन्देह मन को वश में करना बहुत कठिन है, मन चंचल है, किन्तु हे कुन्ती पुत्र! मन अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया जा सकता है।” महर्षि पतंजलि के शब्दों में—

**तन्निरोधः**— अर्थात् अभ्यास और वैराग्य के

दयानंद सरस्वती एक  
सच्चे योगी जिन्होंने  
वेर्या को भी माँ कह कर  
सम्बोधित किया  
और उसके मन  
का पाप खत्म कर दिया

**Contact:****BHARTENDU SOOD**

Editor, Publisher &amp; Printer

# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

द्वारा चंचल मन को, चित्त की वृत्तियों को रोकना चाहिए ।

भगवान कृष्ण आगे कहते हैं—“ जिस के चित्त में असंतोष है व अभाव का बोध है, जो जितेन्द्रिय नहीं है, वही कृपण है। समर्थ, स्वतन्त्र और ईश्वर वह है जिसकी चित्तवृत्ति विषयों में आसक्त नहीं, इसके विपरीत जो विषयों में आसक्त है, वही सर्वथा असमर्थ है।”

**इन्द्रियों की इस सहज चंचलता को दृष्टि में रखते हुए वेद में भक्त बड़ी विनम्रता से प्रभु से प्रार्थना करता है-**

**ओष्णम् । इमामि यानि पंचेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा सञ्चितानि । यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु सः ॥ -अथर्व.**

अर्थात् ये जो पांच इन्द्रियां हैं और जिनके साथ छटा मन है, ईश्वर कृपा से जिनका तीव्रता के साथ मेरे हृदय में स्थान है, जिनके द्वारा ही भयंकर कार्य किये जाते हैं, इन इन्द्रियों और मन के द्वारा ही हमें शान्ति प्राप्त हो ।

**मन की पवित्रता ही ज्ञानी, सन्त, महात्मा व अच्छे पुरुष की निशानी है। मन की पवित्रता सत्य आचरण द्वारा ही आती है।**

एक बहुत पहुचें हुये महात्मा ब्रह्म बेला व सायंकाल जब प्रभु स्तुती के लिये बैठते तो पक्षी उनके चारों तरफ चहचाहने लगते और कई बार बिना किसी भय के उनके शरीर के उपर बैठ जाते । एक छोटा बालक रोज यह देखा करता था । उसे एक खास पक्षी बहुत अच्छा लगता था ।

एक दिन वह उन महात्मा से बोला—महात्मन, मैं रोज इन पक्षियों को आपके पास देखता हूं, मेरा दिल करता है कि एक दो पक्षी अपने पिजरे में रख लूं । जब यह पक्षी कल आप के शरीर पर बैठे तो कृपया आप दो पक्षी पकड़ कर मुझे दे दें । महात्मा ने सोचा छोटा बच्चा जब कह रहा है तो मैं पक्षी पकड़ कर इसे दे दूंगा ।

अगले दिन जब महात्मा उपासना के लिये बैठे तो स्वभाविक था उनका मन उपासना से टूटकर पक्षियों में चला जाता ।

महात्मा क्या देखते हैं कि पक्षी उस दिन उनके शरीर पर निर्भय होकर बैठने कि बजाये दूर ही रह रहे थे । महात्मा को अपनी गलती का आभास हो गया । उन्हें पता लग गया था कि यह इस लिये हुआ क्योंकि उनके मन की अपवित्रता का पक्षियों को आभास हो गया था ।

यह सत्य है कि हमारे मन कि अपवित्रता का आभास किसी भी निर्मल हृदय वाले व्यक्ति को एकदम हो जाता है । इस बारे एक सुनसान सड़क पर बुढ़िया अकेली सामान की गठरी अपने सिर पर रखकर जा रही थी ।

साथ ही चलते एक जवान युवक ने जब बुढ़िया को देखा तो उसे दया आ गई । उसने बुढ़िया से कहा— मां, लाओ आपका सामान थोड़ी दूर तक मैं ले जाता हूं आप थक गई होगी । बुढ़िया ने उस को सामान दे दिया । थोड़ी दूर जाने के बाद बुढ़िया ने युवक से कहा अब मेरी थकावट दूर हो गई है अब सामान मुझे दे दो । युवक ने सामान बुढ़िया को बापिस कर दिया । वे दोनों चले जा रहे थे कि युवक सोचने लगा कि इस सुनसान जगह पर अगर वह सामान ले कर भाग जाता तो यह बुढ़िया कुछ भी नहीं कर सकती थी । उसने एक अच्छा मौका खो दिया । चलमे फिर उससे सामान ले लेता हूं । यह सोचकर वह उस बुढ़िया के पास फिर से गया— लाओ, मांअब मैं लिये चलता हूं ।

बुढ़िया छट से बोली न बेटा न अब मैं खुद ही ले जाउगी । जब तू पहले बोला था उसके और अब के बोलने में बहुत फरक है ।

**जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन'**

अगर हम ऐसा अन्न खाते हैं जिस में हिसां व किसी की बिना कसूर के प्राण लेने का पाप है तोहमारा मन और आत्मा भी हिसां व घृणा का घर होगी । जब हम पशुओं को खायेगें तो पशु ही बनेगें ।

एक और बात, अगर आप कर्मभोग के सिद्धान्त में विश्वास करतें हैं तो मांस खाने का क्या इलजाम है यह बताने की आवश्यकता नहीं । अगर हम बिना कसूर के किसी के प्राण लेगें तो हमे फल भोगने के लिये तैयार रहना होगा । दशरथ और श्रवण की कहानी से हम वाकिफ हैं ।

अर्थव वेद में कहा है

1. सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वरु । अन्योः अन्यमसि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥ अथमर्व 3.30.1

तुम्हारे हृदय में सामनस्व हो, मन द्वेष रहित हो, एकीभाव हो, परस्पर स्नेह करो जैसे गौ अपने नवजात बछड़े से करती है।

# WANTED BRIDE

*Qualified employed match for Arora  
boy 22.2.95 2.00 am Jalandar, Ht 5'-8', B.Tech.  
Hons M. Tech. (IIT Jodhpur) in Mech job in  
MNC Gurugaon, pkg 13 Lac.  
WhatsApp Mob. 83605-36336*

शिमला का **SHARDA**  
**कामधेनु जल**

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए  
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 9465680686 9217970381

Marketing Office - H. No. 231 Sector 45-A, Chandigarh-160047

## पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कौश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :-  
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414  
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272  
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है । H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

या Google Pay No. 9465680686 या Paytm No. 9465680686

## Keep Your Mind Busy With Benevolent Tasks, Negativity Keeps Distance

Bhartendu Sood

There is an apocryphal story to emphasize the need to keep our mind busy with benevolent plans.

A wealthy landlord was approached by a young man for a job. When asked about salary, the young man told that he wanted only work and no salary at all. But, he was quick to add a rider “I should be kept busy all the time and if at any time I am without work, I will kill you.”

Youngman's offer was manna from heaven for the landlord, therefore, he lost no time in employing him. On the first day he completed the assigned jobs with in one hour and went to his master for more work. The master was not only astonished but was very happy as it opened up the possibility of his getting rid of other employees. Next day he lost no time in removing his other employees and gave their work to the new servant. But, the servant was so efficient that even after completing the work of other employees he was free and looked to his master for more work.

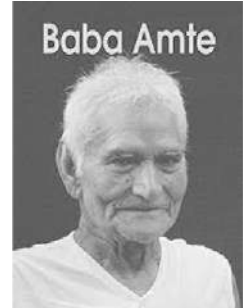
Now the landlord was a worried man. Servant's job condition that if not kept busy all the time he would kill him, started haunting him. He shared his anxiety with one of his friends, who after giving a thought said,” I've a solution to your problem. Don't confine your servant to doing only your personal jobs. Involve him in the jobs which may benefit your entire community and still if he has time, he can be given the jobs which may benefit your entire village. This way he will remain busy and you can live happily as it will mean tremendous goodwill as well.”

Same is the condition of our mind. If kept centered on self, there is every chance of its remaining idle and generating negative thoughts. But, if we come out of the self imposed self-centeredness and reach out to all those who influence our life in one way or the other, our mind will not only remain busy but will generate positive energy which can do wonders to our well being. This gets manifested by this example of dealing with your domestic help. There can be two situations. In the first situation, you keep only objective relationship. She comes, performs the assigned chores and you pay her at the end of the month. In the second option, you interact with her, enquire about her family and children; their schooling and guide her so that children get right education. When you adopt the second path, you are developing a relationship and your mind is engaged in the benevolent cause.

The best way is to broaden the circle of your family to include even those withwhom you have only the relationship of humanity. It will weaken the shackles of your attachment with your own children. This attachment gives birth to expectations from children and when these are not met with, man finds himself in a state of unending mental agony. Therefore the best way is to broaden the definition of your family and relations. When our family is large mind has more persons to think about and more to work with.

Recently in our friend circle, an elderly woman died at the age of 90. For the last almost twenty years she had made it a practice to keep one or two needy boys in her home, who while attending college, would take care of her needs. For boys it was free stay and for the woman it means not living alone but in a family.

When she died most of the near and dear ones were seen criticizing her for ignoring her own children who were staying in USA and other far off places. But I differed -----in my opinion she was really wise & enlightened who instead of expecting her own children to provide companionship, which was not easy to come due to the distance involved, enlarged her circle of family by including even those with whom she had the relationship of humanity only.



## उचित विवाह

नीला सूद

सदियों से हमारे समाज में विवाह का एक ढंग या तारिका बना हुआ है। खास बात यह है यह है कि यह सभी धर्मों में है और सभी स्थानों व देशों में है। एक बात जो सब जगह है वह है कि विवाह तभी पूर्ण है जब उस को समाज, दोनों परिवारों की व उस समाज के कायदे कानून की स्वकृति है। हमारे देश व बहुत से अन्य देशों में विवाह न केवल लड़का लड़की का मिलन व बन्धन है बल्कि दो परिवारों व उनके रिश्तेदारों का एक दूसरे के साथ मिलन व बन्धन है। नए रिश्ते बनते हैं। भाबी, फूफा, साढ़ू, सम्बन्धी शादी के बाद ही नए रिश्ते यादी के बाद ही बनते हैं। एक परिवार दूसरे परिवार के पास आने जाने लगता है। यह तभी सम्भव है जब शादी लड़का लड़की के मिलन तक सिमित न रह कर दोनों परिवारों की स्वकृति व माता पिता की आर्शीवाद के बाद हो। परन्तु इस में जो सब से अहम चीज है वह है लड़का लड़के की आपसी पसन्द बाकी सब इसके बाद है। यही स्वामी दयानन्द ने उचित और वेदों के अनुरूप बताया।



उन्होंने यह बात उस समय की जब कि लड़का व लड़की के आपसी पसन्द या गुणों के आधार पर मेल का तो कोई स्थान ही नहीं था। अधिकतर वर बधु शादी के बाद ही एक दूसरे को देखते व एक दूसरे के बारे में जानते थे। अधिकतर रूथानों पर आसामान्यताएं अधिक व सामान्यताएं कम होती थी कारण रिश्तों को सुझाने वाले व कई बार अन्तिम स्वकृति देने वाले पड़ित होते थे।



इसलिए अच्छी व उपयुक्त शादी वही है जिस में लड़का लड़की एक दूसरे को पसन्द कर के अपने माता पिता को आगे की बात का कार्य सौंप दें। परन्तु यह सब कुछ भारतीय समाज

में इतना आसान नहीं। इस में माता पिता की जिम्मेवारी बहुत बड़ जाती है। कई बार उन्हें अपनी आकांक्षाओं को भी दवाना पड़ सकता है। परन्तु यह उनका कर्तव्य बन जाता है कि वह अपने बेटे व बेटी की पसन्द को सब से अधिक महत्व दें परन्तु यह भी आवश्यक है कि लड़का लड़की दोना, आयु, शिक्षा व जिविका के आधार पर इस योग्य हो चुके हों। अगर कोई 16 साल की लड़की यह कहे कि उसकी हम उमर के साथ जो कि कमाता भी नहीं है शादी कर दी जाए तो ऐसे किसी अनुमोदन को टुकराना ही माता पिता के लिए सही है। बेटा बेटी का भी यह कर्तव्य है कि अपने माता पिता को अपनी पसन्द के बारे में बताने के बाद उन की जायज बातों को माने। आज माता पिता बहुत प्रगतीशील व स्वावलम्बी है वे भी बच्चों की खुशी में ही अपनी खुशी मानते हैं। अधिक जगह पर दहेज आदि कि कोई बात नहीं होती। ऐसे में लड़का लड़की यदि आगे आकर माता पिता से बात करते हैं तो शादी ऐसी हो सकती है जिस में सभी की स्वकृति व खुशी हो जिस में समाज, दोनों परिवारों की व उस समाज के कायदे कानून की स्वकृति हो। यह भी सत्य है आज माता पिता अपने बच्चों की पसन्द की बहुत का बहुत आदर करते हैं। यह सोच हमारे समाज में आ चुकी है। इसलिए आज जब लड़का या लड़की किसी को शादी के लिए पसन्द करते हैं तो यह विचार उन को करना है कि क्या वे दोनो निभा सकेंगे। क्या वे एक दूसरे के पूरक हैं। क्या यह बन्धन एक दूसरे के परिवार व समाजों के अनुकूल है। क्या यह उनकी मृत्यु तक चल सकता है। परन्तु यह समझ एक आयु के बाद ही आती है। 16 साल की लड़की को इन बातों की कोई समझ नहीं होती।

M. : 9465680686



आज व पहले समय की शादी में एक बड़ा फरक यह है कि पहले लड़की के आगे के जीवन की सुरक्षा की जिम्मेवारी लड़के के परिवार पर होती थी यह आवश्यक नहीं था कि लड़की को लड़का पसन्द है। यह उस समय तक सही ठहराया जा सकता है जब लड़की पढ़ी लिखी व अपने पैरों पर खड़ी न हो। अभी भी हमारे देहाती क्षेत्रों में ऐसी शादियां अधिकतर होती हैं। परन्तु आज के युग में लड़की की पसन्द पहले हैं

इस परिवर्तन के बावजूद यदि लड़का लड़की अपनी मनमानी करते हुए शादी के बन्धन के बिना या फिर गुप्त शादी कर एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं तो वह हर प्रकार से गलत है व उसके गलत परिणाम सामने आ रहे हैं। रस्म, प्रथा व रिवाज रिश्ते को मजबूती प्रदान करते हैं।

भारत ही नहीं सभी देश इस स्थिति से गुजरें हैं चाहे योरप या जापान, विवाह तभी पूर्ण माना जाता था जब उस को समाज, दोनों परिवारों की व उस समाज के कायदे कानून की स्वकृति थी। गलत व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ने शादी के रिवाज व रस्म को बहुत ही चोट पहुंचाई। इस के परिणाम भयंकर है। बढ़ते हुए तालाक व गुमनामी का जीवन जीती हुई महिलाएं इस का उदाहरण हैं। बच्चे पैदा न करना और बिना विवाह के लड़का लड़की का एक साथ जीवन जीना भी इसी का कारण है। आवश्यकता है कि सभी विवाह के इस रिवाज परम्परा को सुगठित करें। बच्चों से भी अधिक जिम्मेवारी माता पिता पर है वह बच्चों की पसन्द को महत्व दें न ही दूसरी फजूल की बातों को। भरतीय पढ़े लिखे समाज में भी विवाह के बारे में एक घोर अन्धविश्वास यह है कि वह लड़का लड़की के ग्रह या गुण मिलाते हैं। पहले समय तो पंडित के पास जाते थे अब इसका समाधान कम्प्यूटर पर है। इस कारण भी बहुत से अच्छे बनते हुए रिश्ते रह जाते हैं। हमें इन बे बुनियाद बातों पर उठना होगा।

मेरे ख्याल में उचित विवाह दोनों लड़का लड़की के जीवन में बहुत महत्व रखता है। मैं तो समझती हूं कि स्कूल में यह पढ़ाई का विषय हो ताकि हमारे बच्चे अनजाने में गलती करने से बचें।



## अविद्या ही सब दुखों का मूल कारण है

शास्त्र कहते हैं अविद्या से ही इन्द्रियों और संस्कारों के दोष का जन्म होता है। अविद्या ही मिथ्या ज्ञान का कारण बनती है। मिथ्या ज्ञान के कारण ही हमारा आचरण खराब होता है। जैसा हम आचरण करेंगे वैसे ही संस्कार होंगे। मिथ्या ज्ञान ही हमें सभी पापों की ओर ले जाता है। अतः जब भी मनुष्य अपने आप को दुखी महसूस करता है उसे आत्म निरीक्षण या किसी ज्ञानी गुरु का आश्रय लेना होगा जो कि उसे बता सके कि उसका दुख किस अविद्या के कारण है। शास्त्र कहते हैं, दुख का मूल कारण राग, द्वेष व मोह है। ज्ञानी व्यक्ति अपने आत्म निरीक्षण द्वारा यह पता लगा सकता है कि क्या वह किसी ऐसी सोच का शिकार तो नहीं जिसका मूल कारण राग, द्वेष व मोह है। यही राग, द्वेष व मोह अविद्या की निशानी है। राग और मोह ऐसे दोष हैं जो कि महाविद्वान की विद्वता को भी जंग लगा देते हैं। यह सब कुछ हम अपने परिवारों में ही देख सकते हैं। दूर जाने की आवश्यकता नहीं।

शास्त्र कहते हैं, इसी मिथ्या ज्ञान से दूर होने पर व्यक्ति मोक्ष को प्राप्य होता है और यह सम्भव है चित्त बृत्तियों के निरोद्ध द्वारा। मीमांस दर्शन के रचयिता मीषि जैमिनी के अनुसार वेद के अनुसार कर्म करना ही धर्म है और उस काम को करना जिसका वेद में निषेद्ध है अधर्म है। धर्म का आचरण और निष्काम भाव से किया कर्म, जिसे यज्ञ कहा गया है, अविद्या से व्यक्ति को दूर रखता है।

## It is the participation that signifies the success of an event

Bhartendu Sood

We all, irrespective of our financial status, caste or religion, celebrate and perform various events in our homes, whether it is a birthday, Grih Pravesh or marriage function.. Genrally the host is desirous of the participation of all, whom he invites or who has a stake. Even when we have an inkling that X may give a miss due to some reason, we walk an extra mile to ensure his participation, since the success of the event is measured by the extent of participation.

Inauguration of the new Parliament Building was also one such event for the country. Countrymen would have been happy if it involved participation of all parties.. But, such an important event was given a miss by the political parties representing 55% of the population. Therefore, to say that it was successful will not be correct. Rituals are secondary and important is participation..

It was not difficult to have participation of all, only if the organizers had attached importance to this important aspect "Participation". The opposition parties were not asking for something big or which could



not be done. They had not forwarded the name of one of them; they simply wanted the job to be performed by the constitutional head in the country who is none other than the President of India.

But BJP did not budge or tried to have a consensus due to following reasons.

1 Fresh from an ignominious and unexpected Karnataka defeat in the hands of the Congress party , Mr Modi was greatly peeved and upset.Only if BJP had won in Karnataka, perhaps he would have been generous and accommodating.

2 Even in BJP, many felt that what

opposition demanded was not very unreasonable which could not be accepted but, they have lost their voice in this highly centred set up of the BJP party controlled by the Gujarat lobby and raising head needed an exceptionl courage which they don't have any more. It is the same situation that we witnessed in the Congress party during the Indira Gandhi rule..

Who is the ultimate winner?

As I see, the opposition has scored an important point. First, they are seen closer to each other than before. I remember in 1975 a similar act of arrogance had brought even the born foes like CPM and Jan sangh join hands to defeat the Congress party who at that time looked far more stroner with pan India presence than the present day BJP which is more or less a Central India party or a Hindi heartland party.

Second, BJP's rigidness has failed to send a positive message to the average Indian. Irrespective of religion, caste or origin there is a tradition in the Asian sub continent to give such honour to the eldest in the family and without an iota of doubt, the President of India being the constitutional head deserved this honour.

Third, this development has a potential to bring a wedge even in BJP. Party cadre remains silent till such time the leader looks to be invincible but once he loses that potency, those who had remained suppressed start raising their voice. Fourth, thanks to Modi-Shah engineering, today BJP has almost 30% such MLA's and MPs who were Congressmen at one time. They don't have any qualms in declaring ghar wapsi if they see the leader losing that winning edge which had made them desert their parent organisation.

Next state election in Madhya Pradesh is very important. It will be a fight between the rejuvenated Congress and a determined BJP and that will decide the course of not only 2024 elections but also the hold of Gujarat lobby in BJP.

But it is very important that the Congress party has an agenda to govern. Mere freebies and capitalising the huge antiincumbancy alone will not work for a long.

## कर्ज तो किसी न किसी रूप में चुकाना ही पड़ता है

सीताराम गुप्ता

दो सहकर्मी लंच कर रहे थे। लंच के उपरांत एक सहकर्मी ने अपने बैग में रखे डिब्बे में से कुछ स्वादिष्ट मिठाइयाँ निकालीं और दूसरे सहकर्मी को दीं। वो प्रायः कुछ न कुछ मिठाई अवश्य लेकर आते हैं। दूसरे सहकर्मी ने मिठाइयाँ लेते हुए कहा कि भई रोज-रोज मिठाइयाँ खिलाकर मुझ पर इतना कर्ज न चढ़ाओ। “क्या मतलब?” पहले सहकर्मी ने पूछा। दूसरे सहकर्मी ने कहा, “मतलब ये कि इस जन्म का जो कर्ज होगा वो किसी न किसी रूप में अगले जन्म में उतारना पड़ेगा और मैं नहीं चाहता कि अगले जन्म में मैं कर्ज उतारने के चक्कर में ही लगा रहूँ।” “तो इस जन्म में ही उतार देना,” पहले सहकर्मी ने मज़ाक में कहा। जब हम किसी से कोई चीज़ अथवा पैसा उधार लेते हैं तो वो हमें लौटाना पड़ता है। लौटाना भी चाहिए और समय पर ही लौटाना चाहिए अन्यथा उसके दुश्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए।



कुछ लोग किसी विवशता के कारण उधार ली हुई चीज़ अथवा पैसा लौटाने में असमर्थ हो जाते हैं अथवा बेईमानी के कारण लौटाना नहीं चाहते तो लोग कहते हैं कि कर्ज तो लौटाना ही पड़ेगा। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में जरूर लौटाना पड़ेगा। अगला जन्म किसने देखा है? वास्तव में इस जन्म के कर्ज की अदायगी इस जन्म में ही करनी पड़ती है।



कर्मी का फल किसी न किसी रूप में इसी जन्म में भोगना पड़ता है। और इस जन्म में न चुकाएँ तो? यह संभव ही नहीं है कि इस जन्म का कर्ज इस जन्म में न चुका पाएँ। कर्ज तो इसी जन्म में ही चुकाना पड़ेगा वो अलग बात है कि हमें पता भी न चले और कर्ज का भुगतान भी हो जाए। अब यह कर्ज कर्ज देने वाले को चाहे उस रूप में न मिले लेकिन कर्ज लेने वाले को तो किसी न किसी रूप में चुकाना ही पड़ता है और प्रकारांतर से हुआ भुगतान बहुत महंगा पड़ता है।

हमारे मित्र, रिश्तेदार अथवा अन्य परिचित-अपरिचित व्यक्ति हमें कभी न कभी दावत या कोई भेंट देते रहते हैं या अन्य किसी रूप में सहायता करते रहते हैं इसमें संदेह नहीं। इस संसार में आदान-प्रदान के माध्यम से ही संतुलन बना हुआ है अतः हम भी कोशिश करते हैं कि हम भी किसी न किसी रूप में उनका कर्ज उतारें या उनकी मदद करें। उन्हें दावत या भेंट दें। कई बार जब हम इसमें असमर्थ पाते हैं तो हमें कमतरी का अहसास होता है और इसके परिणामस्वरूप हमारी मानसिकता में परिवर्तन आने लगता है। कई बार हममें हीनता की भावना घर करने लगती है। ऐसे मनोभावों का सीधा असर हमारे भौतिक शरीर व क्रियाकलापों पर भी पड़ता है। कमतरी अथवा विवशता का एहसास, शारीरिक कष्ट व मानसिक व्यग्रता के रूप में वास्तव में हम अपना कर्ज ही चुका रहे होते हैं। कर्ज मात्र रुपए-पैसों या वस्तुओं में ही नहीं चुकाया जाता अपितु मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा झेलकर भी हम परोक्ष रूप से अपना कर्ज ही चुका रहे होते हैं। कई बार हम रुपए-पैसों के रूप में नकद कर्ज भी लेते हैं और उसे ब्याज समेत चुकाते हैं। कई बार कर्ज के रुपए समय पर न चुका पाने के कारण बड़ी शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। वाद-विवाद की दशा में कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ते हैं और पैसों के साथ-साथ जुर्माना, सज़ा या दोनों भुगताने पड़ते हैं। और कई बार तो कुछ लोग जीवनभर कर्ज नहीं चुका



पाते। ऐसे में कर्ज लेने से अंतिम प्रस्थान तक कर्ज लेने वाले पर जो मानसिक दबाव बना रहता है वही वास्तव में कर्ज की अदायगी होता है। जो लोग ये समझते हैं कि किसी प्रकार का कर्ज न चुकाने पर भी उन पर कोई दुःश्रभाव नहीं पड़ता तो वे गलतफहमी के शिकार हैं। यदि वे समय पर कर्ज चुकाते तो उनकी स्थिति कर्ज न चुकाने की स्थिति से बहुत अच्छी होती जिसे वे कभी नहीं जान पाएँगे।

वास्तव में समय पर कर्ज न चुकाकर हम घाटे में ही रहते हैं। किसी भी प्रकार का कर्ज चुकाने के बाद व्यक्ति को बहुत संतुष्टि मिलती है। वो हर प्रकार के तनाव से मुक्त रहता है। समाज में और भी कई प्रकार के कर्ज या ऋण होते हैं जैसे मातृ ऋण, पितृ ऋण, गुरु ऋण, मातृभूमि ऋण इत्यादि। देश व काल के अनुसार और भी कई प्रकार के ऋण हो सकते हैं। इन ऋणों को भी किसी न किसी रूप में चुकाना पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके लिए समाज के नियमों का पालन करना भी अनिवार्य है। यदि उनकी उपेक्षा होगी तो उपेक्षा करनेवाले को उसका खमियाजा भी भुगतना पड़ेगा। यदि हम उपरोक्त ऋणों को सामाजिक व्यवस्था के अनुसार नहीं चुकाएँगे तो अन्य किसी रूप में चुकाने को बाध्य होंगे। इस कर्ज अदायगी का सबसे दुखद पहलू यही है कि हम कर्ज चुका रहे होते हैं और कर्ज चुकता भी नहीं हो पाता।

कई व्यक्ति अपने सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों का निर्वाह भी ठीक से नहीं करते। इसका भुगतान भी अवश्य करना पड़ता है। लोग प्रायः शिकायत करते हैं कि बूढ़ापे में उनके बच्चे न उनका सम्मान ही करते हैं और न ठीक से देखभाल ही करते हैं। ये स्थिति भी कहीं न कहीं कर्ज उतारने से ही जुड़ी होती है। जो लोग अपने माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक से नहीं करते अथवा उनकी उपेक्षा करते हैं उनके बच्चे भी उनके प्रति अपने दायित्वों का निवाह ठीक से नहीं करेंगे तो इसमें आश्चर्य की बात क्या है? ये वास्तव में परोक्ष रूप से कर्ज की अदायगी ही है। आपने माता-पिता का कर्ज नहीं उतारा तो आपके बच्चों की आपके प्रति उपेक्षा उस कर्ज की अदायगी ही है। हर संबंध में यही नियम लागू होता है अतः पीड़ा आिवा परोक्ष रूप से कर्ज अदायगी से बचने के लिए हमें ईमानदारी से संबंधों का उचित निर्वहन करना चाहिए।

ये भी देखने में आता है कि लिया गया ऋण न चुकाने पर कुछ लोगों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। वे बड़े बेशर्मा होते हैं और कुछ भी उदरस्थ करने के बाद डकार तक नहीं लेते। ऊपर से तो लगता है कि ऐसे लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन उन पर जो प्रभाव पड़ता है वह कम घातक नहीं होता। ऐसे व्यक्ति हमशा भयभीत अथवा सशंक रहते हैं कि देनदारी को लेकर कहीं कोई उनका अपमान न कर दे। वे लोगों से बचते फिरते हैं। बार-बार झूठ बोलते हैं जिससे उनका चारित्रिक पतन होता है। उनका आत्मविश्वास समाप्त हो जाता है। उनका न केवल सामाजिक दायरा संकुचित हो जाता है अपितु उनसे भी निकृष्ट लोग उनके अपने और समर्थक बन जाते हैं। ये भी एक प्रकार से कर्ज की अदायगी ही है। यदि हम सामान्य तरीके से कर्ज की अदायगी नहीं करेंगे तो वह असामान्य तरीके से होगी और अवष्य होगी लेकिन इसका प्रभाव बहुत बुरा होगा।

यदि कोई व्यक्ति कर्तव्यच्युत, निर्लज्ज अथवा अव्यावहारिक हो गया है तो ये बहुत ही घृणित बात है। ये भी कर्ज अदायगी ही है लेकिन ये किसी सजा से कम नहीं। ज़रूरी है कि हम अपने आर्थिक ही नहीं सामाजिक कर्तव्यों और दायित्वों के प्रति भी सचेत रहें, उन्हें पूरा करें अन्यथा अन्य किसी रूप में उनकी बड़ी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी इसमें संदेह नहीं। जिस प्रकार से प्रशासनिक नियमों का उल्लंघन करने अथवा कानून तोड़ने पर जुर्माना या सजा निश्चित है उसी प्रकार से सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने पर भी अपराधबोध एवं अपराधबोध से उत्पन्न मानसिकता व उससे उत्पन्न शारीरिक दोशों अथवा व्याधियों से मुक्ति असंभव है। इससे बचने के लिए हमें चाहिए कि हम समय पर अपने उत्तरदायित्वों का ठीक से निर्वहन करके सामान्य तरीके से कर्ज अदा करते रहें।

ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,  
दिल्ली - 110034  
मोबा0 नं0 9555622323

## वातावरण का हमारे व्यवहार व सोच पर बहुत गहरा प्रभाव होता है

नीला सूद

श्रवण कुमार अपने अन्धे माता पिता कि सेवा के लिये जाने जाते हैं एक बार सदा की तरह वह अपने माता पिता को वहंगी में बिठाकर तीर्थ यात्रा के लिये ले जा रहे थे तो एक स्थान पर पहुंचकर उन्हें अनायास ही अपने माता पिता पर बहुत क्रोध आया व खीझ उत्पन्न हुई। वह क्रुद्धित होकर माता पिता से बोला कि आप दोनों के कारण मेरे जीवन का सुख आराम भी खत्म हो गया है। मैं और नहीं कर सकता, मैं जा रहा हूँ।

पहलीबार पुत्र को ऐसे बोलता देखकर माता पिता चकित रह गये। वे नये स्थान के वातावरण के प्रभाव को समझ रहे थे व कुछ देर सोचकर श्रवण से बोले—पुत्र हम तुम्हारी हालत को समझते हैं। तुम ऐसा करो हमें अगले गांव छोड़ दो उस के बाद जहां भी जाना चाहते हो चले जाओ।

श्रवण कुमार ना नुकुर करके आधे मन से नदी पार करके माता पिता को दूसरे स्थान पर ले आया व पड़ाव डाल दिया। अभी कुछ दिन ही हुये थे कि श्रवण कुमार को अपने कीये पर बहुत पछतावा व गलानी होने लगी। उसे लगने लगा कि उसने अपने माता पिता के साथ बहुत गलत सलूक किया। वह माता पिता के पास गया व बिलख बिलख कर रोने लगा।

माता पिता चाहे अन्धे थे पर थे तपस्वी व ज्ञानी। उन्होंने पुत्र को गले लगाकर समझाया “ पुत्र इसमें तेरी कोई गलती नहीं। जो तूने किया वह उस स्थान के वातावरण का प्रभाव था और तू जो अब कर रहा है वह इस जगह के वातावरण का प्रभाव है।

हां यह सत्य है कि वातावरण का हमारे व्यवहार पर बहुत गहरा प्रभाव होता है। आपने देखा होगा जब हम विदेश किसी सभ्य देश में जाते हैं तो वहां के नागरिकों की तरह हर सेवा के लिये बिना किसी नोक चोक के पकिर्ती में खड़ा होना प्रारम्भ कर देते हैं। वही तौर तरीका हमें अच्छा लगता है व उसकी हम भूरी भूरी प्रशंसा करते हैं। पर जैसे ही वापिस भारत के हवाईअड्डे पर पहुंचते हैं तो कुछ देर भी अपने उपर नियंत्रण करना मुश्किल हो जाता है और समान वाली बैल्ट पर ही जबरन आगे पहुंच जाते हैं। यह वातावरण का प्रभाव ही है। अब हमें पकिर्ती में खड़ा होने का तरीका खराब लगने लगता है।

यही नहीं, जब हम ऐसे स्थान पर हों जहां सफाई का बहुत ख्याल रखा जाता हो तो गदंगी दालने से हिचकचाहते हैं पर जैसे ही हम ऐसे स्थान पर पहुंचते हैं जहां गदगी का ख्याल नहीं रखा जाता, हम भी वैसे ही बन जाते हैं। मैंने खुद अनुभव किया है कि जब हम विदेश में किसी बड़े कैसिनो को देखने जाते हैं तो सैकड़ों युवक युवतियों को जूआ खेलते देखकर हमारा मन भी एक बाजी लगाने को कर पड़ता है। इस से एक बात स्पष्ट है कि वातावरण का हमारे व्यवहार पर व सोच पर बहुत गहरा प्रभाव होता है। एक महान व्यक्ति ने तो यहां तक कहा है ‘ मुझे बताइए फलां व्यक्ति के सर्गीं साथी कोन हैं, मैं बता दूंगा कि वह व्यक्ति कैसा है। यह मुहावरा— ‘कोयले की दलाली में मुंह काला’ विल्कुल सत्य है।

हिटलर कहा करता था ‘ एक झूठ अगर सौ बार दुहराया जाए तो चाहे वह सत्य न बने पर सत्य जैसा प्रतीत होने लगता है।

इस से एक बात सपष्ट है कि हम कितने भी ज्ञानी या विद्वान क्यों न हो हमारे लिये व खास कर बच्चों के लिये संगती व वातावरण का ख्याल रखना बहुत जरूरी है।



M. : 9465680686

## Charity and Generosity – Value Addition to Human Lives

### Kumar

Generosity and Charity form the nerve centre of human value system and constitute the guiding principles of virtuous life. Both are complementary to each other and have subtle differences, which only embellish human existence.

Charity is the compassionate act of giving to the needy in order to alleviate their distress or to ease their discomfort. Generosity goes much beyond the realms of sympathy and is a spontaneous response. It is an act of giving what we value so that we derive real joy out of it. Generosity is not need based and is an act of parting with our valued possessions. In many ways, it is a superior act with a profound touch of sacrifice mingled with an attempt to share happiness and joy with others.

Kahlil Gibran aptly states that "Generosity is not in giving me that which I need more than you do, but it is in giving me that which you need more than I do". Karna, in the epic Mahabharat, is a stellar example of excellent generosity in giving his possessions to whomsoever visited him.

All our spiritual texts and quotes emphasize the significant role of Charity and Generosity in achieving enlightenment on a sustained basis. Hinduism places Charity as an essential feature of Dharma and such acts add to good Karma, which leads to Moksha, the ultimate destination. When asked by the Yaksha as to who is the best friend of a person about to die, Yudhishtir's epic reply was that acts of Charity done only constitute one's best friend at such a time.

Chandokya Upanishad emphasises on five essential ingredients of a virtuous life, namely Tapas (Penance), Dana (Charity), Arjava ( Straightforward), Ahimsa ( Non violence) and Sathyavachana ( Truthfulness). Bhagwad Gita defines Charity as one without expectations of any return at a proper time and place to a worthy person.

Christianity states that whoever is generous to the poor lends to the Lord ,who will repay him for such good deeds. Both Buddhism and Jainism have Dana as the core theme resulting in sharing and selfless giving without any anticipation of return or benefit to the giver.

The Principle of Zakat or Charity is one of the pillars of Islam which insists that it should be an essential part of basic human character. Both Zakat ( Obligatory Charity) and Sadaqa (Voluntary Charity) are given tremendous importance. Giving a part of one's wealth in Charity guarantees protection from misfortune.

In today's materialistic world, Charity as a virtue needs to be ingrained in the basic human character right from School curriculum. Though Charitable organizations and activities are multiplying, it is also true that worldly pursuits and selfish interests overshadow Charitable disposition. It is time to put the clock back and revive the spirit of Charity to make human lives more meaningful, empathetic and valuable.

#### MAKE CHARITIES LIKE RAHIM

Abdul Rahim Khankhana was a great Suffi poet who lived during the reign of Akbar. Though a Muslim, he is remembered for his Hindi couplet .He earned name, fame and enormous wealth for his poetry which had a Suffi influence. Benevolent by nature, he would distribute almost all the money he got in rewards. But, he had a very unusual habit, while making donations and charities, he wouldn't look in the face of the receiver, instead would keep his head low with his eyes cast at the receiver's feet.

His close friend poet Gang would often take note about his unusual behaviour. One day he couldn't stop himself from asking " Rahim, I have observed that when the others make charities, they have invariably their heads raised with their faces betraying arrogance and ego and won't settle unless glorified. But, you always have your head low and are seen looking at other men's feet." Rahim could not escape answering his friend – his reply in the Hindi couplet is like this "It is somebody else who is giving and he is giving day and night. But, people think that I am giving and it



**Abdul Rahim Khankhana**

makes me feel ashamed and embarrassed and it is sufficient to bring down my head and I find it difficult to see them in their face- denewala aour hei, jo deta din rain, log ham pe bhram kare, lajja se niche ho jayen nain.”, Here he is referring to that Supreme Power, Vedas and Shastras advise a man to earn as much as he can, by keeping his means pure. And donate what is over and above his needs to his less fortunate brethren and to those who have engaged themselves selflessly in altruistic pursuits. But such dispensing of charity should not bring arrogance in the donor and he should think that God has made him the conduit to pass on the wealth to the needy. And for this also he should thank the Supreme because there are not many to whom God grants his grace by giving them wealth as well as wisdom.

Upanishads suggest dispensing of charity without seeking recompense. The Chandogya Upanishad talks about the fearless cart driver Raikwa who chastises the mighty king for carting material riches to him to tempt him to pass on his spiritual knowledge. “Have neither pride nor vanity, O king, in the charities you dispense. Give not something as yours but as something given to you by that Supreme Power for giving to others through you. He who comes to know this truth is a seer because he rises above ego and false sense of pride.” Says Raikwa.

**Mr Kumar is a Mechanical Engineer, retired as Senior Vice President in a Corporate Company. I have a passion for writing on various facets of life covering Business, Industry, Economics, Finance, Religion, Spirituality, Social, National and International issues**



## मनुष्यों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है

पहली श्रेणी में वे हैं जो आत्मा की आवाज को किसी भी हालत में अनसुना नहीं करते। जिस काम के लिये आत्मा हां करती है उसे ही करते हैं। आत्मा परमात्मा में रत रहती हैं। ऐसे व्यक्ति उच्चतम श्रेणी में आते हैं।

दूसरी श्रेणी में वे हैं जो मन की तो करते हैं पर आत्मा की भी सुनते हैं। आत्म चिन्तन और आत्म निरीक्षण करते रहते हैं। ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिये दूसरे का बुरा नहीं करते क्योंकि आत्मा की आवाज कुछ नियन्त्राण रखती है।

तीसरी श्रेणी में वे हैं आत्मा की आवाज को नहीं सुनते हैं और आत्म हनन करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति निकृष्ट व अधम श्रेणी के कहलाये जाते हैं। जो भी समाज में अधर्म और बुराईयां हैं, इन्ही व्यक्तियों के कारण हैं।

हमें यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर सब की आत्मा में बैठा है और प्रत्येक कार्य से पूर्व सब को सत्योपदेश कर रहा है। जो व्यक्ति उसके संकेत को समझ लेता है और उस के अनुरूप चलता है यह बहुत सी बाधाओं से बच जाता है। केवल मात्र ईश्वर को मानने से प्रयोजन सिद्ध नहीं होता बल्कि महत्व है कि हम इस का कितना लाभ ले रहे हैं।



## अच्छे लोगों का आचरण ही दूसरों के लिए उपदेश है

एक बार गांधी जी से जब कोई सदेश देने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा मेरा जीवन ही मेरा सदेश है। ससार में वही लोग सही माने में प्रेरणा होते हैं जो ग्रंथ लिखने की अपेक्षा अपना जीवन ग्रंथ पीछे छोड़ जाते हैं।

चीन के प्रसिद्ध दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने भी कहा है कि अच्छे लोग अपने आचरण से दूसरों को उपदेश देते हैं, मुख से नहीं।

कहने का तात्पर्य यह है कि मात्र मौखिक उपदेश या ज्ञान का कोई महत्व नहीं है। हमारा आचरण ही सब से सब से बड़ा उपदेश है।





## दस सुनहरी सिद्धान्त

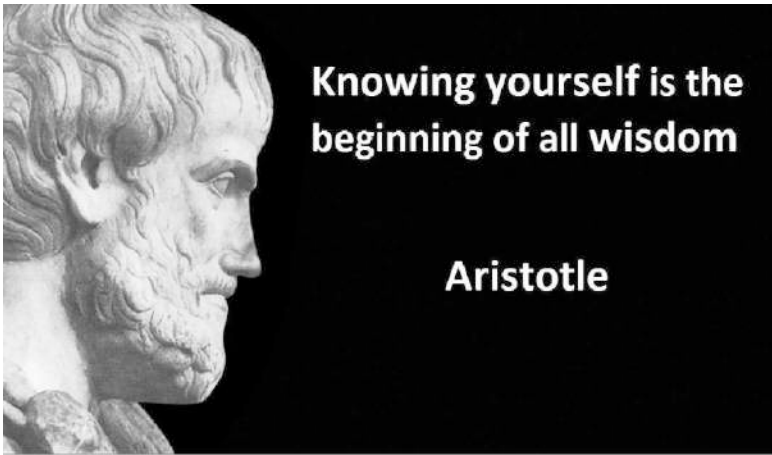
धर्मपाल कपूर

संसार में कुछ सिद्धान्त सत्य व शाशवत होते हैं तो कि सारी मानवजाति न कि किसी खास सामप्रदाय या गति के लिए लाभप्रद होते हैं। उदाहरण के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा बनाए दस नियम न केवल आर्य समाजियों के लिए लाभप्रद हैं बल्कि सारी मानव जाति के लिए लाभप्रद हैं। उदाहरण के लिए :“ मनुष्य को असत्य को छोड़ने व सत्य को ग्रहण करने में सदैव उद्यत रहना चाहिए। इस नियम का पालन न केवल आर्य समाजियों के लिए लाभप्रद है बल्कि सारी मानव जाति के लिए लाभप्रद है। ऐसे सिद्धान्त समय के साथ बदलते नहीं। सत्य आज भी वैसे ही सर्वोपरी है जैसे की हजारों साल पहले था। क्या है यह सिद्धान्त ?



**पहला-** हमारा जीवन इतना अच्छा हो कि ऐसा लगे कि इस में ईश्वर का बास है। जब हम प्रभु भक्ति द्वारा ईश्वरिय गुण धारण कर लेते हैं तो इस में ईश्वर बास करने लगता है। इसी कारण से महान आत्माएं जैसे श्री रामचन्द्र व कृष्ण हैं उन्हें भगवान कहा जाता है।

**स्वयं को जानिए व स्वयं से प्रेम किजीए**—जो मनुष्य स्वयं को जान लेता है वह ईश्वर को भी जान लेता है और स्वयं को जाने बिना ईश्वर को जानना भी असंभव है। कहते हैं ध्यान व मनन द्वारा ही स्वयं को जाना जा सकता है। मुश्किल यह है कि हम दूसरों को व दूसरों के बारे में जानने में इतने व्यस्त रहते हैं कि अपने बारे में जानने का समय ही नहीं रहता



### सारी मानवता से प्रेम करना

**सीखें**—आपके परिवार का दायरा इतना बड़ा हो कि उसमें सभी के लिए स्थान हो। पिछले समय की बात है। एक व्यक्ति की विधवा बहन जिसकी 5 साल की बेटी थी किसी बيمारी के कारण स्वर्ग सिधार जाती है। भाई को लोकलाज के लिए उस 5 साल की लड़की को अपने घर लाना पड़ता है। उनके अपनी भी उसी आयु की बेटी होती है। वह व्यक्ति और उसकी पत्नी दोनों लड़कियों में बहुत भेद भाव

रखते हैं। बहन की बेटी की जिन्दगी घर की नोकरानी की तरह होती है। उसे स्कूल की शिक्षा के बाद आगे नहीं पढाया जाता जब की अपनी बेटी को वह आगे पढ़ने के लिए बाहर भेजते हैं। इस में एक अच्छी बात यह थी कि दोनों बहनों में इस भेद भाव व अन्तर के बावजूद बहुत प्यार था। जब उनकी अपनी लड़की पढ़ कर आती है तो रिश्ते के लिए शहर के सब से प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने लड़के के साथ उनकी लड़की देखने आते हैं। दूसरी लड़की बाहर रोज की तरह सफाई में लगी रहती है। लड़के की नजर उस पर पड़ती है तो वह उस के बारे में पूछता है। उसकी बहन खुल कर उसके गुणों का वखान करती है। लड़का उस से शादी की ईच्छा जाहिर करता है। उस की बहन बहुत खुश थी। परन्तु माता पिता बहुत क्रोद्धित थे। उन्होंने अपनी बेटी से पूछा कि उसे इतनी प्रशंसा करने की क्या आवश्यकता थी। वह अपने माता पिता से कहती है कि

यदि आप ने अपनी तंगदिली के कारण इस के साथ अन्याय किया है तो मैं नहीं कर सकती । मैंने अपनी उच्च शिक्षा में यही सीखा है कि हम सब को सामान दृष्टि से देखें और प्रेम करना सीखें । जो उपेक्षित है वे तो हमारे प्रेम के अधिक हकदार है । उस लड़की ने अपने व्यवहार से अपने मा बाप को बहुत बड़ी शिक्षा दे दी थी ।

### **ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करें व आशावादी बने ।**

इस जगत को व प्राणीजगत को बनाने वाला ईश्वर है । वही इसको चला रहा है । हमें प्राण देता है पालता है व रक्षक है । हम कर्मफल के सिद्धांत को समझें । अच्छे कर्म का अच्छा फल बुरे कर्म का बुरा फल । कर्म भोग कर ही खत्म होते हैं । यदि मनुष्य कर्म का फल भेगने में स्वतन्त्र होता तो वह पाप करके भी अपनी ईच्छा द्वारा उसका फल भोगता परन्तु ऐसा नहीं है । पाप करने का फल बुरा है यह इस बात को बताता है कि कोई न्यायकारी शक्ति इस व्यवस्था को चला रही है । वही ईश्वर है । उसी ईश्वर में पूरा विश्वास व स्मरण ही सुख शांति की कुंजी है । ईश्वर जो भी करता है उसमें हमारी भलाई छुपी होती है । यदि यह बात जीवन में आ गई तो जीवन में सुख शांति रहेगी व आप आशावादी रहेंगे । इसे ही सम्पूर्ण कहा गया है । इसलिए पापपूर्ण कर्म से दूर रहने की हर समय कोशिश करें और ईश्वरिय गुणों को धारण करने में पूरी शक्ति दें । यही व्यक्ति को आशावादी बनाता है ।

**अपने जीवन में सेवा, संयम, साधना, सत्संग, स्वाध्याय, विनम्रता, धैर्य, संतोष, हर हालत में सम रहना, हर रोज कोई न कोई निष्काम आर्ति दूसरे के भले का काम करना जैसे गुण लाएं**

### **स्वयं के दोष देखिए और दूसरों के गुण**

यदि आप गुण ग्राही बनोगे तो आप का जीवन गुणों का भण्डार बन जाएगा और यदि दोषग्राही बनोगे तो आप का जीवन दोषों का भण्डार बनेगा और आप को कभी संतोष नहीं होगा । अतः सदैव अपने दोषों को जायजा लेते रहें और उनको दूर करने का प्रयत्न करें । हमें दूसरे के दोषों को देखने का कोई अधिकार नहीं । यह अधिकार केवल डाक्टर, अध्यापक और बकील के पास ही है ।

### **दूसरों की भलाई का मार्ग अपनाएं**

प्रत्येक व्यक्ति अपने सार्थक के अनुसार दूसरों की भलाई कर सकता है । इस के लिए अमीर होना अवश्य नहीं परन्तु संवेदनशीलता का होना जरूरी है । इसलिए संवेदनशील बने । दूसरों के बारे में सोचे । आप को कोई अच्छा उपहार दे जाता है । आपके दो प्रकार की सोच हो सकती है । पहला, यह मेरे लिए है इसे मुझे ही प्रयोग करने का अधिकार है । दूसरा मैं दूसरों के साथ बांट कर प्रयोग करूँ और यदि इस की आवश्यकता मेरे से अधिक दूसरे को है तो उसे ही दे दूँ । दूसरे मार्ग में सुख है व प्यार फैलता है । यही आपके इस जीवन को और अगले जीवन को अच्छा बनासता है व इसी को मोक्ष कहा गया है ।

**आप महान लेखक, विचारक व दान परोपकार का जीवन जी रहे हैं । आप की आयु 80 से उपर है । मुझ पर उनकी बहुत कृपा है । निशुल्क अपनी पुस्तकें मुझे अपने खर्च पर मुझे भेजते रहते हैं ।**

**0172-2567845, 9356301618**

**लेखक अपने विचारों के लिए खुद जिम्मेवार है । किसी भी न्यायिक क्रिया के लिए केवल चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है ।**

## A case of wrong priorities-Chip manufacturing vs Vande Bharat trains

Bhartendu Sood

Last three months saw the spate of Vande Bharat trains being introduced, one after the other, The celebrity train acquired publicity as the PM of the country was flagging these off these irrespective of the location, though introduction of such trains has been a normal thing in the past, a few being Shatabadi, Janshatabd, Rajdhani and August Kranti. Not to forget, the concept of short distance fast trains was given by late Madhav Rao Scindia when he was the Railway Minister in the eighties of the last century.

First coming to Vande Bharat, it may be special to those who do not keep themselves abreast of the developments in developed countries or who attach value to only cosmetic beauty instead of time of journey. Average train in any developed country runs almost at double the speed than this Vande Bharat and in China and Japan speed is three to four times also as they have electromagnetic tracks. Speed wise the much hyped Vande Bharat is no better than Shatabdi or Rajdhani introduced in 1988. I remember Shatabdi from Chandigarh to Delhi, introduced in 1988 used to take exactly 3 hours, would leave at 6.50 in the morning to touch platform 1 of the New Delhi Station at 9.45. Now 35 years later, Vande Bharat introduced with great fan-fare also takes 3 hours. Where is the technological improvement which may support this hullabaloo? In the face of this, Modi ji had announced the bullet train in 2014 to connect Ahmedabad with Mumbai. Nine years have passed but it is yet to see the light of the day, whereas almost all trains in China, Japan or even South Korea are bullet trains running for the last almost two decades. In the face of crying infrasture and safety, the money we have spent on the Ahmedabad-Mumbai bullet train is akin to wearing rag shirt with golden buttons. Even in Europe, most of the rains run at a much higher speed than this Vande Bharat. We are celebrating flagging off of Vande Bharat whereas China has successfully flown their domestically made aero plane.

Again Vande Bharat train is not a necessity. It is another option for the fast growing Indian middle class who like to splurge money on things with better cosmetic look and ambiance. Fact is that, introduction of so many new trains is not warranted considering that the Indian railways has yet to touch the number of passengers that it carried in 2019 i.e. prior to Covid and second the supporting infrastructure continues to be unsustainable. Due to the wrong priority which made the Vande Bharat to receive priority over the much needed semiconductor-chips, our automobile and mobile phones industry suffered huge delays for want of Chips.



Without an iota of doubt Semiconductor Chip has come to acquire the status of one of the most important industrial products along with batteries. Whether phones or cars, most of the modern day gadgets with electronic base need chips. Today the entire world depends upon China and Taiwan who meets 75% of the requirements. Look at China's farsightedness and ability to draw the right priorities; they had installed facilities for Chip manufacturing around 2007 itself and have been exporting since then. China's two largest chip manufacturers, the state-backed Semiconductor Manufacturing International Corporation, or SMIC, and Hua Hong Semiconductor have each announced billions of dollars this year to expand production into mature chips. When it comes to chips below 10 nanometers . 90% of the capacity is in Taiwan. ne may ask the BJP government as to why it didn't attach any importance to Chip manufacturing in the last 9 years

though we have a semiconductor plant in the public sector and our projected semiconductor requirement in 2026 is \$63 billion (Rs 519,561 crore). What is most paradoxical that despite being the leader in Semiconductor chip designing' we didn't take steps to install manufacturing facility since importing chips is commercial a better option than to install a facility. A small country like Taiwan has achieved commendable success.

One should not forget that only two years back our PM had declared that India would not import any goods from China. This sudden shift in policy demanded that we concentrate on critical items like Chip manufacturing rather than Vande Bharat. No wonder when the import- export data was presented for the year 2022, it revealed that the country's import from China had increased by a whopping 12% in a year. One wonders how the PM could make such a declaration without weighing implications. What was most amazing that by exploiting the loop holes in the policy, Indian big houses like Reliance continued their import of chips from China, it were the small traders and consumers who faced the brunt of this highly flawed policy.

We are in the year 2023 and 10th year of Mr Modi's rule but Chip manufacturing remains on the drawing board. Need is to shift our priorities from Vande Bharat to Chips manufacturing. But till such time we concentrate on Vande Bharata to show case our achievements we should forget about CHIPS. For that we need a man who while drawing priorities is least driven by electoral gains. Incidentally both the Ministries are under the same person-Ashwini Vaishnaw, our PM's right hand man.



## VERY STRANGE.....But, true

**\* One couldn't give a piece of bread to the child above  
But this painting where he looks sad was sold for 10 lakhs of rupees  
\*Rs 20 looks so big amount when you have to give that to a poor  
But looks small when you giving it as a tip in HOTEL  
\*Praying to God for 3 min looks hard  
But 3 hrs of movie is ok for us  
\*After whole day of hard work , we have no problem to go to a gym  
But doing house work and helping mom looks very tiring!**





## महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वीं जन्म जयन्ती के वर्षों में, आओं उन की मान्यताओं को याद करें

**जब आप उस सृष्टि के रचइता की भक्ति में लीन हैं तो मैं तो क्या चाहे कोई राजा ही क्यों न आए, आपको अपनी भक्ति को नहीं छोड़ना चाहिए**

कहते हैं एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती लाहोर में जब एक आर्य समाज में पहुंचे तो हवन हो रहा था। स्वामी जी को देखते ही सभी आदर के तौर पर अपनी अपनी जगह से खड़े हो गये। स्वामी जी ने सब को बिठा दिया व हवन जारी रखने को कहा। हवन खत्म हो गया तो स्वामी जी सब को सम्बोधित करते हुए बोले—जब आप उस सृष्टि के रचइता की भक्ति में लीन हैं तो मैं तो क्या चाहे कोई राजा ही क्यों न आए, आपको अपनी भक्ति को नहीं छोड़ना चाहिए। चाहे मैं हु या कोई राजा, उसको बनाने वाला वह प्रभु ही है, हम उस प्रभु से अधिक सम्मान के हकदार कैसे हो सकते हैं। ऐसा व्यक्ति जब गुरु के रूप में मिल जाये तो जीवन का सही रास्ता अवयश मिलेगा।



### संस्कृत का प्यार वेदों से उपर नहीं था

स्वामी दयानन्द ने कलकत के संस्कृत कालेज के बारे में बहुत सुन रखा था। परन्तु जब उन्हु पता लगा कि वेद नहीं पुराण पढाए जाते हैं तो बहुत निराश हुए। उनका कहना था कि पुराणों को पढ़ कर ही तो भारत की जनता गुमराह थी इसलिए यदि वेद नहीं पढाए जाते तो उस संस्कृत कालेज का कोई फायदा नहीं, बन्द करना ही अच्छा है।

ब्राहमण ही रसोइये क्यों?

हुगली में स्वामी दयानन्द ने वर्णाश्रम पर एक भाषण दिया जिस में इस बात पर खेद व्यक्त किया कि समूचे भारत में साधारणतया ब्राहमण ही रसोईए होते हैं। उन्होने बताया कि प्राचीन भारत में ऐसी कोई बात नहीं थी। ब्राहमण का काम तो ज्ञान देने से सम्बन्धित था और वह जन्म से नहीं परन्तु अपने कर्म द्वारा ब्राहमण होता था। रसोईए का काम तो जिस किसी में भी कला है वह कर सकता है, चाहे वह किसी वरण का भी हो।

### कलकता यात्रा के दौरान कई बातों पर उनके विचार सुदृढ़ हो गए व खुल कर सामने आए

- 1 मूर्ती पूता पूरी तरह गलत हैं केवल सर्वशक्तिमान, निराकार व सर्वज्ञ ईश्वर की ही उपासना सही है।
- 2 कोई व्यक्ति जन्म से नहीं अपितु अपने कर्म से ब्राहमण या शुद्र होता है।
- 3 रिश्यों के अधिकार पुरुशों के सामान होने चाहिए
- 4 बाल विवाह गलत हैं और बन्द करना चाहिए
- 5 पुराणों को वेदिक सहित्य नहीं माना जा सकतां
- 6 बच्चों का कर्तव्य है कि माता पिता व घर में जो दूसरे बढत्रे हैं उनकी सेवा करें। मुत व्यक्ति का श्राद्ध मूर्खता है।
- 7 आर्य जाति को हिन्दु कहना गलत है। यह तो विदेशियों ने तिरिस्कार से दिया था। हम वैदिक धर्मी हैं।

### महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार प्रभु भक्ती क्या है

जैसे— जैसे ईश्वर को जाना वैसे— वैसे अपने व्यवहार में लाना

अर्थात जैसे- जैसे ईश्वर के गुणो का हमें ज्ञान हो वैसे- वैसे उन गुणों को हम अपने जीवन में धारण कर लें, तभी हमारी प्रभु भक्ती सफल है, अगर हम अपने जीवन में धारण नहीं कर पाते हैं तो वह प्रभु भक्ती अधूरी है व असफल है।

उदाहरण के लिये ईश्वर दयालु, न्यायकारी, अभय, सब का कल्याण चाहने वाला, सत्य आनन्द देने वाला है, हम भी प्रभु भक्ती द्वारा इन गुणों को अपने जीवन में लाए, यही प्रभु भक्ती है।

## Rural life plus, plus----- Rhinos

Neela Sood

Last month I had gone to see Kaziranga National Park in Assam. To see Rhinos and elephants moving in herds was the curiosity in mind. As we reached at the gate, there was disheartening news to greet us. “ Park will remain closed for three days from 6th April to 8th April in view of the impending visit of the Hon'ble President of India Smt. Draupadi Murmu “ said the guard at the gate which bore a festive look.



Soon we realized that the restriction was for the vehicles, inhabitants of that place were moving freely. We also ventured to move inside with the locals and kept pace with them in order to break conversation. When we had moved a KM or so, I exchanged greetings with one of them and asked with the innocence of a child whether we could spot moving Rhinos. They looked at our face and before they could say anything we narrated to them our story how we had to face a disappointment having travelled all the way from Chandigarh. Two things which made them sympathetic were, first –we had come from a distant place and second our advanced age. They looked at each other and then one of them said, “Look, our village is about 4 Km from here inside the park. From our houses Rhinos can be seen grazing and sometimes elephants are also there. You can come with us. Rest is your luck. After about 90 minutes we were in their village.

For a while, we forgot about Rhinos and started taking stock of their way of life. It was a real rural India of Babu's vision. With houses, doors & windows, chairs and table all made of the local material bamboo. It was a joint family, immediately 6-7 women came and squatted themselves on the floor but they made us to sit on Bamboo Chairs. On the backside of their homes, they had small farms on which they grew rice, moong dal and vegetables for their own consumption. A small shed for cow and buffaloes could be seen in every house. As we moved around, the two things which left us puzzled were an elevated thaw shed on the back yard of the house and a small boat in the front as we have a car..

“We know you must be wondering why we have made this elevated shed” and then continued, “ In a rainy season, sometimes Brahmaputra swells and our houses get submerged in the water. We take our families to this elevated sheds and move to the safer places with these boats. Now come with me food is ready. After walking for 4-5 Km you must be hungry.” He exclaimed. Yes it was an irresistible offer. Rice dal and green vegetable was more delicious than the cosines in a reputed eateries in the city. Now we were exchanging information about our respective places. What was heartening that their grown up son could communicate in English also. Government has set up schools and hospitals for them. Not only is this one from each family employed by the local park authorities. As we were busy in talks, the younger son came running to tell that Rhinos were coming to the water pond near their house. It was a sight we had never imagined. Rhinos in a herd was a sight we had only visualized. We profusely thanked them.

As we were returning, I couldn't restrain from telling my hubby, “ In a way President's visit has come as a blessing. Otherwise how we could have seen the rural life plus,plus----- Rhinos.

M. : 9465680686

## मृत्यु के बाद क्या साथ जाता है?

डॉ. सुरेन्द्र कुमार अरेला

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है और इसके अनुभव बताने के लिए व्यक्ति जीवित नहीं रह पाता, फिर भी उपनिषद इत्यादि शास्त्रों में मृत्यु का वर्णन मिलता है। कुछ मनीषियों ने मृत्यु के बाद कैसा लगता है इसके बारे में लिखा है।

सामान्य भाषा में किसी प्राणी के जीवन के अन्त को मृत्यु कहते हैं। यह लालच, मोह, रोग, कुपोषण के परिणामस्वरूप हो सकती है। मृत्यु के 101 स्वरूप होते हैं, लेकिन मुख्य 8 प्रकार की होती है, जिनमें बुढ़ापा, रोग, दुर्घटना, आकस्मिक आघात, शोक, चिंता और लालच शामिल हैं।

इसके विपरीत अपनी आयु पूर्ण कर लेने के उपरांत आत्मा द्वारा जीर्ण-शीर्ण मरणधर्मा शरीर के त्याग को ही मृत्यु कहते हैं। वेद भगवान ने 'मृत्युरीशे' कहकर स्पष्ट कर दिया है कि मृत्यु अवश्यंभावी है, तो मृत्यु पर विजय कैसे प्राप्त की जा सकती है। मृत्यु कोई शब्द नहीं, बल्कि महाभारत ग्रंथ के अनुसार, मृत्यु एक परम पवित्र मंगलकारी देवी है।

कहा जाता है कि व्यक्ति खाली हाथ आया है और खाली हाथ ही जाएगा। आपने लोगों को कहते सुना होगा कि मृत्यु के बाद व्यक्ति के साथ कुछ नहीं जाता। उस व्यक्ति से जुड़ी भौतिक सुख की जो भी चीजें हैं वे सब यहीं रह जाती हैं। यदि धर्मग्रंथों को देखा जाए, तो उनमें स्पष्ट बताया गया है कि व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी कुछ चीजें उसके साथ अगले जन्म तक जाती हैं।

ग्रंथों के अनुसार व्यक्ति की मृत्यु के बाद 5 निम्न चीजें उसके साथ अगले जन्म तक जाती हैं। ऐसी पांच चीजें जो मरने के बाद भी व्यक्ति के साथ जाती हैं, निम्न हैं—

1. ज्ञान— ज्ञान से अभिप्राय किसी भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान अथवा किसी समाज शास्त्रा ऐतिहासिक ज्ञान से नहीं है। यह वह ज्ञान है जो आत्म परमात्मा से संबंधित है अर्थात् आत्म ज्ञान। यह व्यक्ति को भीड़ में सबसे अलग करता है। ज्ञान के बल पर आप अपनी अलग पहचान और लोगों पर छाप छोड़ने में कामयाब रहते हैं। इसलिए अपनी मृत्यु से पहले पहले आप जितना ज्ञान ले लेंगे वह आपके बहुत काम आएगा। ऐसी मान्यता है कि जीवित रहते हुए व्यक्ति जो गुण सीख लेता है वह उसके साथ मृत्यु के बाद भी जाते हैं। इसलिए अपना समय खुद को अच्छा ज्ञान और गुण सीख में व्यस्त करें। श्री गीता में भी इस बात का जिक्र किया गया है कि ज्ञान और दान कभी नष्ट नहीं होता है।

2. कर्ज— धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि कर्ज कभी भी व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ता, अगर किसी व्यक्ति ने आपका भला किया है, तो उसका यह ऋण जैसे ही मौका मिले उतार देना चाहिए। अगर आप किसी का ऋण नहीं उतारते, तो उसे जन्म जन्मांतर तक चुकाना पड़ता है, वह कर्ज उतारना पड़ता है। अगले जन्म में वह कर्ज किसी भी रूप में आपको चुकाना पड़ सकता है। साथ अगर आपने किसी को कर्ज दिया है और उस व्यक्ति की मृत्यु कर्ज चुकाने से पहले ही हो जाती है, तो आपको भी बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। इसलिए ऐसे व्यक्ति को उसकी मृत्यु के साथ ही माफ कर देना आपके लिए उचित रहेगा।

3. वासना और मोह— अगर कोई किसी चीज को पाने की चाहत रखता है और वह चीजव्यक्ति को न मिले, तो मृत्यु के बाद भी उस चीज की वासना उसका पीछा नहीं छोड़ती। सांसारिक सुखों की चाहत रखना वासना ही है। वासना को लेकर विष्णु पुराण में एक कथा भी है। राजा भरत को अपने हिरण के बच्चे से बहुत प्यार था। उसी के बारे में सोचते हुए उसने प्राण त्याग दिए। अगले जन्म में राजा को खुद हिरण रूप में जन्म लेना पड़ा। इसलिए कामना और वासना को अपने मन में हावी नहीं होने देना चाहिए। साथ ही किसी भी चीज को लेकर अधिक मोह माया नहीं होनी चाहिए।

4. कर्म— गीता में कहा गया है कि मनुष्य जीवन बिना कर्म के संभव नहीं है। हर पल मनुष्य अच्छे ये बुरे कर्म करता है। मृत्यु समीप आने पर व्यक्ति के कर्मों द्वारा ही तय होता है कि उसे परलोक में सुख मिलेगा या दुख। इन्हीं के परिणाम से अगले जन्म में अच्छा बुरा फल प्राप्त होता है। कर्म 7 जन्मों तक व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ते हैं। इसका एक उदाहरण महाभारत में भी दिया है। बाणों की शैल्य पर लेटे हुए भीष्म को भगवान कृष्ण से जब भीष्म वे

पूछा कि मुझे ऐसी मृत्यु क्यों मिली, तो भगवान कृष्ण ने उन्हें 7 जन्म पहले की घटना याद दिलाई। 7 जन्म पहले भीष्म ने एक अधमरे सांप को उठाकर नागफनी के कांटों पर फेंक दिया था। कर्म मनुष्य का कभी पीछा नहीं छोड़ते।

5. पुण्य— दान और परोपकार कभी खाली नहीं जाता है। इसका उल्लेख शास्त्रों में भी किया गया है। जीवन में अगर कोई अपरिचित व्यक्ति आपकी मदद करता है तो इसका अर्थ है कि वह पिछले जन्म में आपके द्वारा किए गए दान और परोपकार को चुका रहा है। इसलिए दान पुण्य करते रहना चाहिए। यह व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी इसके साथ जाते हैं।

यद्यपि साधारण व्यक्ति मृत्यु को भय और उदासी के साथ देखता है, जबकि जो पहले मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं वे इसे सुखद, शांति और स्वतंत्रता के एक अद्भुत अनुभव के रूप में जानते हैं। मृत्यु होने पर आप भौतिक शरीर के सभी बन्धनों को भूल जाते हैं और अनुभव करते हैं कि आप कितने स्वतंत्र हैं। पहले कुछ क्षणों में भय की भावना रहती है— अज्ञात का भय, किसी अपरिचित वस्तु का भय। परन्तु उसके बाद एक महान् अनुभूति होती है— आत्मा चैन और स्वतन्त्रता की हर्षपूर्ण भावना का अनुभव करती है। आप जान लेते हैं कि आपका अस्तित्व नश्वर शरीर से अलग है।

हममें से सभी को किसी दिन मरना ही है, अतः मृत्यु से भयभीत होने से क्या लाभ! निद्रा में हम अपने शरीर की चेतना खो देने की सम्भावना पर दुःखी नहीं होते, हम निद्रा को स्वतन्त्रता की एक अवस्था के रूप में स्वीकार करते हैं और उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करते हैं। उसी प्रकार मृत्यु है, यह विश्राम की एक अवस्था है, इस जीवन से निवृत्ति। इसमें भयभीत होने की कोई बात नहीं है। जब मृत्यु आए, तो उस पर हँसें और उसका आदर के साथ स्वागत करें। मृत्यु केवल एक अनुभव है जिसके द्वारा आपको एक बहुत बड़ा पाठ सीखना है— आप तो आत्मा हैं एवम् आप मर नहीं सकते।



## In the world of fraud?

When things happen suddenly without any warning, you can say it was an unprecedented event and couldn't do anything about it. But when you know that events are going to happen what will you do? Let me explain.

Over a hundred years ago, when the Titanic sank the captain did not know there was an iceberg. By the time he saw it and began steering the ship away, it was too late. The vessel had already hit the iceberg and enough damage was done for the Titanic to submerge in the water.

Hundred years later. A new Titanic is on its voyage. It has set up everything in order, taken all the precautions and measured every risk. The captain also knows that there is going to be an iceberg and he has to be cautious. The only challenge is that he doesn't know when and where it will appear from.

Every major business, specifically finance companies, is going through a Titanic phase today. They are aware of cyber frauds and hackers. which is akin to an iceberg situation; they don't know when it will hit the system. They don't know whether the firewalls they have built will be compromised or not.

[In a report this week](#), about 92% of all customer fraud in India are payment related, with about 57% conducted on platforms, which have specifically mushroomed during the pandemic following a surge in remote work, delivery applications, and contactless payments. The majority of frauds happened because the data has been breached by internal employees.

There is another dimension to this which I think is also one of the major reasons. Today every bank has approximately partnered 4-5 FinTechs. Large banks will have at least 10 FinTech partnerships and many IT vendors for various solutions. From scaling up infrastructure and building a cloud to segregating the data for the better use of AI and from onboarding employees virtually to customer acquisition, sharing is quite common. Hence, the chances of a data breach are quite common too.



## सावरकर का कद उतना नहीं जितना भाजपा व शिवसेना ने बना दिया

भारतेन्दु सूद

कोई संदेह नहीं कि संदेह नहीं कि वह था जितना कि भाजपा श्रद्धानन्द व लाला व्यक्ति राष्ट्र के लिए कार्य काने में उनसे



वीर सावरकर



स्वामी श्रद्धानन्द

विनायक दामोदर सावरकर एक हिन्दु नेता थे। कोई राष्ट्र भक्त भी थे। परन्तु उनका कद इतना उंचा नहीं ने अपनी बोटो के लिए बना दिया। आर्य नेता स्वामी लाजपतराए व बहुत से अन्य आर्य समाजी व दूसरे बलिदान व हिन्दु जाति की रक्षा वे उत्थान के लिए कही आगे थे व अपने प्राण नियोछावर कर दिए।

नेता को भी स्थान तभी मिलता है जब कोई उनके लिए बोलने वाला हो। हमारे आर्य समाजी तो मोदी योगी भक्त पहले व दयानन्द भक्त बाद में है। ऐसे में स्वामी श्रद्धानन्द व लाला लाजपतराए यदि भुला दिए गया तो कोई हैरानगी नहीं। अब तो इन गुरुकुल के कर्मकाण्डी प्रचारको ने एक और काम शुरू का दिया है। **दयानन्द की बात कहने का तो किसी में साहस नहीं--मूर्ती पूजा, श्राद्ध करना, शादियों के लिए ग्रहों**

का मेल आदि करना स्वामी दयानन्द ने गलत व पाप बताया है, यह तो बोल नहीं सकते, क्योंकि ऐसा बोलने के लिए साहस चाहिए व जिनके घर हवन करने गए उनको भी अच्छा नहीं लगता, इसलिए रामचरित मानस की कथा शुरू कर दी है। कहते हैं हम खंडन नहीं मंडन करते है। दो घंटे में एक घंटा हवन कर दिया व एक घंटा भक्ति के भजन हो जाते है। ऐसे में स्वामी श्रद्धानन्द व लाला लाजपतराए का नाम कौन लेगा। सावरकर ही चलेगा।

## पुस्तक

### (English Book of short stories--Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम **Our Musings** है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक एकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक एकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये है। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक ईंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है



नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मान्य है।

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059  
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली  
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

## JYOTI DISTRIBUTED MILK AND BANANA TO NGO CHILDREN ON HER BIRTHDAY



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

**A/c No. : 32434144307**

**Bank : SBI**

**IFSC Code : SBIN0001828**

**All donations to this organization are exempted under section 80G**



स्वर्गीय  
श्रीमती शारदा देवी  
सूद

निर्माण के 70 वर्ष

# गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई  
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)



स्वर्गीय  
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त  
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaligar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

9465680686 , 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

## जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



O P SETIA



J L KHURANA



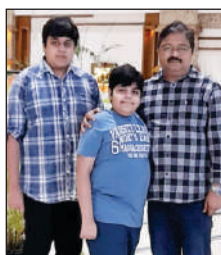
P K MALHOTRA



CHITKARA MADAN LAL



MRS AND MR. O.P.NANDWANI



PRAFUL GUPTA



R

Mrs Vinod Bala donated ration to bal Ashram

Shalini Nagpal D/o Dr Saroj Miglani performing Havan with the children





# DIPLAST

TRUSTED QUALITY WITH BEST TECHNOLOGY SINCE 1972  
FOR BETTER HOMES










IS : 12701



Water Storage Tanks  
Diplast Water Storage Tanks

IS : 4985



PVC Pressure Pipes  
Diplast PVC Pressure Pipes

IS : 9537



PVC Electrical Conduits  
Diplast PVC Electrical Conduits

IS : 13592



PVC SWR Pipes  
Diplast PVC SWR Pipes

Learn Waste Segregation & Composting on Zoom Meeting

Contact : 9041655102

**DIPLAST PLASTICS LTD: C-36, Indl. Area, Phase - 2, SAS Nagar, Mohali (Punjab)**  
**Email-diplastplastic@yahoo.com Website-www.diplast.com Ph. 9814014812 0172-4185973, 5098187**

## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh  
9217970381 and 0172-2662870**